ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-11* December- 2017
Innovation The Research Concept

ग्रामीण आर्थिक विकास पर सड़कों का प्रभाव

संगीता तिवारी
सहायक प्राध्यापक,
राजनीतिक विज्ञाान विभाग,
श्री गुरूनानक महिला
महाविद्यालय
जबलपुर

सारांश

ग्रामीण पुनर्निर्माण की विभिन्न योजनाओं की सफलता सड़कों के विकास पर निर्भर है। सड़के ऐसी सुदृढ़ धुरी के समान है जिसके चारों ओर खेती कासतकार तथा सम्पूर्ण ग्रामीण जीवन चक्कर काटता है। अच्छी सड़को के निर्माण से किसान मिश्रित खेती को अपना सकता है। वह शीध्र नष्ट होने वाली वस्तुओं तथा सब्जी फल, दूध, अण्डे तथा मक्खन आदि का उत्पादन करके उन्हें निकटतम मण्डियों में ले जाकर शीध्र ऊँची कीमत पर बेचकर लाभ कमा सकता है। इस अतिरिक्त आय से वह अपनी खेती में उत्पादन की नवीन विधियाँ अपना सकता है और अपने रहन–सहन के स्तर में सुधार कर सकता है।

इस प्रकार सड़के सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र की उन्नति के विकास की कुंजी है। ये रक्तवाहिनी धमनियो और शिराओं के समान है, जिनके द्वारा प्रत्येक सुधार प्रवाहित होता है। अतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सड़कों का बड़ा महत्व है।

मुख्य शब्द : ग्रामीण,आर्थिक विकास, फैक्ट्री

प्रस्तावना

सड़कों की तुलना मानवीय शरीर की धमनियों से की जाती है जिनसे होकर आर्थिक कार्यकलापों का रक्त बहता है। सड़कों के माध्यम से मनुष्य माल तथा विचार एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँच जाते है। सभ्य समाज में सड़कों के बिना काम नहीं चल सकता किसानों को भी सड़क चाहिए जिससे वह अपनी उपज बिक्री केन्द्रों तक ले जा सके। व्यापारी को अपना सामान मँगाने तथा बाहर भेजने के लिए सड़क चाहिए। डॉक्टर जो मरीज देखने जाता है, अध्यापक जो बस से स्कूल जाता है, क्लर्क जो साइकिल से ऑफिस जाता है, मजदूर जो पैदल फैक्ट्री जाता है, सब सड़कों की आवश्यकता महसूस करते है। सड़के सम्पर्क बढ़ाती है। सड़के जिस प्रकार वस्तुओं के स्वतंत्र विनिमय को प्रोत्साहन देती है उसी प्रकार विचारो के स्वतंत्र विनिमय को भी, जीवन में सड़कों का बड़ा महत्व है हमारा देश आज भौतिक तथा नैतिक पुनर्निमाण करने के लिए तथा उद्योगों का विस्तार करने के लिए योजनाएँ चल रही है। इस योजनाकाल में सड़कों का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। बसों तथा लारियों के अतिरिक्त सड़कों का उपयोग बैलगाड़ी, ऊँटगाड़ियों, घोड़ा गाड़ियों, बाइसिकिलों, रिक्से तथा स्कूटरों द्वारा किया जाता है। सड़कों पर इस्तेमाल होने वाले वाहन सस्ते पड़ते है और उनमें अनुरक्षण व्यय भी कम होता है।

कुंजी शब्द– सड़कों का प्रभाव, ग्रामीण आर्थिक विकास

अध्ययन का उद्देश्य

1. सड़क परिवहन ग्रामीण क्षेत्र के साधन, उत्पादन, वितरण ताकि अन्तिम उपभोक्ता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।
2. अध्ययन क्षेत्र में सड़क योजना का ग्रामीणों की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
3. सड़क परिवहन ग्रामीण क्षेत्र में अमूलचूल परिवहन लाता है।

हमारे देश में ऐसे बहुत से क्षेत्र है पहले जहाँ कोई कुशल संचार व्यवस्था नहीं है। इनमें से ऐसे क्षेत्र भी है जहॉ सब प्रकार की फसले उगाई जा सकती है तथा जो व्यवसायिक उत्पादन की सीमा में आ सकते है। केवल भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उनको निम्न सीमान्त क्षेत्र समझा गया तथा उनमें उपज केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही उगाई जाती रही। देश में भूमि के बहुत से क्षेत्र में कॉस तथा मूँज घासे खड़ी है। सड़कों के अभाव में इन क्षेत्रों में खेती का कार्य प्रारम्भ ना हो सका। भारतीय सड़क तथा परिवहन विकास संस्था के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क विस्तार करके हम खेती वाली भूमि की मात्रा 25 प्रतिशत बढ़ा सकते है। यह निर्विवाद सत्य है कि

भारत रेलों के विस्तार से कृषि उत्पादन का विस्तार हुआ कृषि उत्पादन तथा परिवहन साधन का यह संबंध सड़कों में रेलों की अपेक्षा अधिक लागू होता है। क्योंकि सड़कें कृषि क्षेत्रों के हृदय में धमनियों की भांति दौड़ती है। यदि यह कहना सच है कि थलसेना की शक्ति के सूचक उनके पैर है तो यह कहना और भी सच होगा कि कृषि की शक्ति सूचक सड़क होती है। सड़कों के विस्तार द्वारा उपजाऊ भूमि के बड़े भाग में जो अभी बेकार पड़ा है केवल कृषि कार्य ही सम्भव होगा वरन् कृषि की वर्तमान भूमि की उत्पादन क्षमता में भी वृद्धि होगी। उत्पादन तथा वितरण दोनों कार्य ही सड़कों के विस्तार पर निर्भर करते है। कभी–कभी देश में आवश्यकताओं के अनुरूप पर्याप्त खाद्य सामग्री होती है। परन्तु अकाल की दशायें इसलिये पैदा हो जाती है कि उस खाद्य सामग्री का ठीक प्रकार शीघ्र वितरण नही होता है। सड़के खाद्यान्न के प्रवाह को अधिक अनाज वाले क्षेत्र से अभाव वाले क्षेत्रों में प्रोत्साहित करती है। अभाव वाले क्षेत्र में खाद्यान्न का मूल्य कम कर देती है और इस प्रकार अकाल की तीव्रता को कम करती है। हमारे ग्रामीण पुनर्निर्माण की सब योजनायें सड़क परिवहन से जुड़ी है सड़कों के द्वारा किसान नगरों से अपनी आवश्यकता की वस्तुयें प्राप्त करता है। यात्रियों के लिये रेलवे यात्राओं द्वारा सुविधाएँ उन सबकी पहुँच में लाती हैं जो उन सुविधाओं को उठाना चाहते है, परन्तु सड़क तो स्वयं प्रत्येक व्यक्ति की पहुँच में प्रवेश कर जाती है। इंग्लैण्ड में मोटर के द्रुतगामी परिवहन ने किसानों को आवश्यक वस्तुयें पहुँचाने में सहायता दी तथा मोटर बस सेवाओं ने 20 वर्षो में ग्रामीण व्यक्तियों में यात्रा की आदत का इतना विकास किया कि अन्य कोई साधन 100 वर्षो में कर पाता।

हमारी खाद्य समस्या के परिमाणात्मक पहलू के अतिरिक्त एक गुणात्मक पहलू भी है। हमारे भोजन में संरक्षणात्मक तत्व विद्यमान नहीं होते जैसे– अण्डे, फल,सब्जियाँ इत्यादि जिससे हमारा भोजन सन्तुलित हो पाये। अधिक सड़के किसान को ये पदार्थ उत्पन्न करने तथा शीघ्रता से विक्रय करने में सहायता देंगी। उसकी आमदनी बढेगी तथा वह इस आमदनी से बीज, औजार, तथा खाद्य खरीद सकेगा। सड़क पुनः संगठन कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार– ''अच्छी सड़क व्यवस्था शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तुओं जैसे फल, तरकारी, दूध, घी, तथा अण्डों आदि की बिक्री को प्रोत्साहन से बाहर की दुनियाँ में पहुँच कराती है जहाँ से वह खाद्य–तेल का इंजन तथा कृषि की उन्नति पद्वतियों की जानकारी लेकर लौटता है'' जिससे कृषि में सुधार कर सकेगा। सड़के गतिशील अस्पतालों को किसानों के दरवाजे चिकित्सा के लाभ उसे सरलता से मिल सकेंगे। गतिशील पुस्तकालय समाचार पत्र तथा पत्रिकायें उसके पास विश्व के कौने–कौने से समाचार तथा विचार लायेगी। परिवहन नगर तथा गॉव के बीच आवागमन अधिक सरल तथा शीघ्रगामी बना देगा। किसान नगरों को प्रायः जाया करेंगे। दूसरों से विचार विनिमय करेंगे विकास योजनाओं को कार्यान्वित होते हुए देखेंगे। तथा कृषि में नवीन विचार तथा पद्धतियों का प्रयोग करेंगे और अपने जीवन–स्तर को ऊँचा उठा सकेंगें।

सड़के आर्थिक प्रगति में सहायक

रूस ने अपनी दस वर्षीय योजना में हजारों मील लम्बी सड़कों का निर्माण किया तथा अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। इजराइल देश ने जब जन्म लिया सड़कों की स्थित बड़ी बुरी थी। सड़क निर्माण होते ही पूरे देश की काया पलट हो गई। सूखे रेगिस्तान जो हजारों वर्षो से सूखे रहे अब सुन्दर उद्योगों की सीमायें है, सड़क परिवहन इस कमी को दूर करता है हमारे देश में जनसंख्या का एक बड़ा भाग इसलिए अज्ञानता में रहता है क्योंकि यह भाग दूर गाँव में रहता है जो शहरी क्षेत्रों से जुड़ा हुआ नहीं है। समाचार पत्र और पत्रिकायें उन दूर बसे गाँव मे नहीं पहुँचती। सड़के किसान की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहन देंगी। यात्रा स्वयं एक शिक्षा है। दूसरे व्यक्तियों से सम्पर्क तथा विचारों का आदान–प्रदान उसे राष्ट्र का सजगू सक्रिय सदस्य बनायेगा। जिससे राष्ट्रीय एकता मजबूत हो सकेगी।

ग्रामीण सड़के

राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि और विकास में सड़कों का विशेष महत्व है। भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में तो इनका महत्व और भी अधिक है। क्योंकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था का विकास सड़कों के विकास में निहित है। कृषि आयोग के शब्दों में ''यातायात प्रणाली विपणन का एक अभिन्न अंग है और आधुनिक व्यापारिक विकास सर्वत्र ही अच्छी सड़कों के महत्व में वृद्धि कर रहा है। अच्छी सड़के कृषि उत्पादन में वृद्धि और जीवन निर्वाह कृषि को व्यापारिकक कृषि द्वारा प्रस्थिापित करके ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का एक अचूक साधन है। यह बोझ ढोने वाले पशुओं के स्वास्थ्य पर अधिक भार पड़ने उनकी कुशलता में वृद्धि करता है, वाहनों की घिंसाई कम करता है तथा समय बचाता है। यही नहीं निर्यात अथवा आन्तरिक उपयोग के पदार्थो के उत्पादन करने वाले उद्योगों के विकास में भी अच्छी सड़के विशेष सहायक होती है। ग्रामीण क्षेत्र में अच्छी सड़कों के निर्माण से कृषि क्षेत्र में वृद्धि होगी। हमारे देश में ऐसी बहुत सी भूमि है। जिस पर सड़कों के अभाव में खेती नहीं की जा सकती। इसका कारण यह है कि वहाँ तक पहुँचना और कृषि औजारों व उपकरणों को ले जाना सम्भव नहीं है। भारतीय सड़क एवं यातायात विकास संस्थान द्वारा किये गये सर्वेक्षण से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में सड़के बनाने से हम कृषि क्षेत्र में 25 प्रतिशत की वृद्धि कर सकते है।

ग्रामीण क्षेत्रों में अच्छी सड़कों के निर्माण से गहन कृषि भी सम्भव होती है क्योंकि अच्छी सड़कों द्वारा खाद्य, उर्वरक,उत्तम बीज और उन्नत कृषि यंत्रों को खेती तक पहुँचाना सरल होता है। आगतों द्वारा भूमि का पूर्ण विदोहन किया जा सकता है। परन्तु जैसे– जैसे हम सड़कों से दूर होते जाते है, कृषि क्रिया की गहनता और क्षमता घटती चली जाती है। अधिक दूर जाने पर गहन कृषि करना लाभप्रद नहीं रहता क्योंकि यातायात व्यय बहुत अधिक बढ़ जाता है। जिससे लागत व्यय भी बढ़ जाता है। सड़कों के विकास से कृषि का स्वरूप भी बदला जा सकता है। जीवन निर्वाह कृषि का प्रतिस्थापन व्यापारिक कृषि से किया जा सकता है। खाद्यान फसलों

को बोने के स्थान पर व्यापारिक फसलों को उगाया जा सकता है। इस प्रकार कृषि को एक लाभदायक व्यवसाय बनाने में सड़के महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समस्या

1. चूंकि भारत में पूँजी की कमी है इसलिए रेल निर्माण की अपेक्षा सड़क निर्माण को प्रमुखता देनी चाहिए।
2. सड़क बनाने में जो वस्तुएँ उपयोग में लाई जाती है। उन साधनों की गुणवत्ता खराब होने की वजह से सड़क जल्दी खराब हो जाती है।
3. कुछ खाद्यान वस्तुएँ ऐसी होती है जो जल्दी खराब हो जाती है जैसे– सब्जियाँ, फल, अण्डे इत्यादि अगर समय पर मण्डियों में नहीं पहुँचते तो यह खराब हो जाते है जिससे किसानों को सही दाम नही मिल पाता है।
4. अभी भी बहुत से ग्रामीण क्षेत्र ऐसे है जहाँ सड़कों का अभाव है।
5. वर्षात में सड़के खराब हो जाती है।

सुझाव

1. सड़क बनाने में इस्तेमाल किये जाने वाली वस्तुओं की मात्रा व गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए।
2. वर्षांत के समय जो सड़के खराब होती है उनका पुनः निर्माण होना चाहिए।
3. गाँवों में सड़क के बीच से नालियाँ बनाकर खेतों में पानी ले जाया जाता है उसके लिये पुलियों का निर्माण होना चाहिए।

निष्कर्ष

रेलों की तुलना में सड़क यातायात से कई निश्चित लाभ उपलब्ध होते है। सड़के बनाने के लिए पूँजी की मात्रा की आवश्यकता पड़ती है और दूसरे विदेशों से आयात की आवश्यकता नहीं होती है। चूँकि भारत में पूँजी की कमी है, इसलिए रेल निर्माण की अपेक्षा सड़क निर्माण को प्रमुखता देनी चाहिए। दूसरे सड़क परिवहन अधिक तेजी, अधिक सुविधाजनक एवं अधिक लोचपूर्ण है। सड़के परिवहन विशेषकर छोटे फासले के सातायात के लिए और वस्तुओं की गतिविधि के लिए लाभदायक है। मोटर गाड़ियाँ, सबारियों एवं माल को किसी भी स्थान से एकत्रित कर सकती है और वे जहाँ भी चाहे उन्हें पहुँचा सकती है। सड़क परिवहन द्वारा ही घर–घर से वस्तुओं को एक् किया एवं पहुचाया जा सकता है। परन्तु रेल मार्ग निशिचत होता है और इसलिए रेलों में सड़क परिवहन की लोचशीलता उपलब्ध नही। तीसरे सड़के रेलों का अनिवार्य पूरक परिवहन है। रेले शहरो को तो मिला सकती है। परन्तु भारत तो ग्रामों का देश और इसलिए सड़क परिवहन द्वारा ही ग्रामों तक पहुचा जा सकता है। चौथे सड़क परिवहन का किसानों को विशेष रूप से लाभ है। अच्छी सड़को द्वारा किसान अपना उत्पादन विशेषत नाशवान वस्तुएँ जैसे सब्जियाँ बड़ी आसानी से मण्डियों तथा शहरों तक ला सकते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *(डॉ.एम.एल.झिंगन) रोष्टोव की आर्थिक विकास की अवस्थायें विकास का अर्थशास्त्र एवं आयोजन पेज नं. 133*
2. *कौशिक डॉ. आर.एस. आधुनिक परिवहन, नवयुग साहित्य आगरा, पृ.247*
3. *कौशिक आर.एस. आधुनिक परिवहन, नवयुग साहित्य आगरा पृ. 249–250*
4. *रूद्रादत्त के.पी. एण्ड सुन्दरम भारतीय अर्थ व्यवस्था पृ.78*
5. *नरोत्तमशाह ''इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर दा इण्डियन इकॉनामी बेदीलाल डाग्ली (स) इन्फ्रास्ट्रक्चर फार दा इण्डियन इकॉनामी '' (बाम्बे 1989)*
6. *डॉ. शीलचन्द्र गुप्ता भारतीय अर्थ व्यवस्था*
7. *बी.सी. सिन्हा भारतीय अर्थव्यवस्था*
8. *गुप्ता आर.सी. ''औद्योगिक अर्थशास्त्र'' आगरा बुक स्टोर आगरा (1982) पृ.8*
9. *शर्मा एवं सिंह आर्थिक विकास के सिद्धांत एवं नियोजन के सिद्धांत (1993)*
10. *टी. डब्ल्यूशुक्ल, द रोल ऑफ गवर्नमेंट इन प्रमोटिंग इकानॉमिक डेवलपमेंट इन व्हाइट एल.डी. (इ.डी.) द स्टेट ऑफ सोशल साइंस*
11. *सी.पी. एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट 1869–70*
12. *मित्रा एम.के.पुरी बी.के. भारत के आर्थिक विकास एवं नीति पृ. 15*
13. *इकॉनामिक सर्वे गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया।*